




## SHRI LIL BAHADUR CHETTRI

Shri Lil Bahadur Chettri is an eminent writer of Nepali language.

2. Born on 1st March, 1934 in Guwahati, Assam, Shri Chettri passed his Matriculation Examination from Shillong Govt. High School in 1952. Shri Chettri obtained B.A degree with honours in 1956 from Cotton College, Guwahati and Master Degree in Economics from Guwahati University in 1958. He joined the All India Radio, Guwahati as staff artist after completion of post graduate study and served there for about four years as programme producer and announcer of Nepali programme, called "Uttaranchal Anusthan". During his service period there, he had broadcast number of Radio dramas, feature stories and utility talks etc. which were his own creations. Later on, he joined as Lecturer in Economics in Arya Vidhyapeeth College, Guwahati and after the service of 32 years he retired in 1994 as Head of the Department of Economics of that institution.

3. Shri Chettri took keen interest in creative literature from his childhood and his first publication "Shiva Stuti", a prayer in poetry appeared in 1948 in his mother tongue Nepali as a booklet. Later on, he started writing fictions. So far four novels, four story collections, six essays, six dramas and one-act plays, one collection of prefaces, one collection of poems had been published to his credit. His first novel "Basain" (Leave out the original place to settle elsewhere) published in 1957 from Kathmandu proved to be a best seller and its 40th edition appeared in the market so far. It has been prescribed as one of the text books by the Tribhuvan University in intermediate level for the last 50 years. Besides other languages such as Chinese, Assamese, Maithili, the novel has been translated into English twice by two different learned writers of Western countries; Larry Hartshell of Seatle and Dr. Michael J Hutt, Professor of London University (School of Oriental and African Studies). The translation has been published by Columbia University Press, New York and the novel has earned international repute for the writer. A feature film based on the story of the said novel with the same title was nominated for the Oscar in 2005 as foreign language film (Nepali) from Nepal. Chettri's another novel "Atripta" (Insatiate) published in 1968 has also been well received and prescribed by the Guwahati University as text book in Nepali MIL for about 20 years. His third novel "Brahmaputra ko chheu chhau" (Banks of the river Brahmaputra) earned the Sahitya Akademi Award for him in 1987 and the novel has been translated and published by Sahitya Akademi in many other languages. His short stories and essays have also been widely appreciated and translated in many other languages. Telefilms based on some of the stories were also telecast by Doordarshan.

4. Shri Chettri has been actively associated with several social, educational, literary and cultural organizations. He has been the president of many social, literary and educational institutions and a member of Nepali Advisory Board, Sahitya Akademi, New Delhi and National Book Trust of India for some years. He has also been a member of Gorkha Development Council, Govt. of Assam.

5. Shri Chettri has received numerous felicitations, honours, appreciations and awards of state, national and International level including Bhanu Award, Govt. of West Bengal, Darjeeling in 1985; Sahitya Akademi Award, New Delhi in 1987; Madan Smarak Samman, Varanasi, 2001; Agam Smriti Award, Gangtok, Sikkim, 2005; Abhijaman Trust Award, Kuwait, 2008; Nai Derunikh International Award, Kathmandu 2012; Felicitation from Bhupen Hazarika Cultural Trust on the occasion of 88th Birth Anniversary of Dr. Bhupen Hazarika; Jagdamba Shri International Award, Kathmandu 2016; Basudev Malati Smriti International Award, 2019 from the International Nepali Literary Society, USA; Felicitation from Sikkim Manipal Institute of Technology, Guwahati 2019 etc.





## श्री लील बहादुर क्षत्री

श्री लील बहादुर क्षत्री नेपाली भाषा के एक प्रख्यात लेखक है।

2. श्री क्षत्री का जन्म 1 मार्च, 1934 को गुवाहाटी, असम में हुआ। उन्होंने ने शिलांग गवर्नमेंट हाई स्कूल से 1952 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। उन्होंने 1956 में कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी से ऑनर्स के साथ बी.ए. की डिग्री और 1958 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। अपनी स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने आकाशवाणी, गुवाहाटी में स्टाफ आर्टिस्ट के रूप में कार्यभार ग्रहण किया और वहाँ लगभग चार साल तक कार्यक्रम निर्माता और नेपाली कार्यक्रम ''उत्तरांचल अनुष्ठान'' के उद्घोषक के रूप में कार्य किया। अपनी सेवा अवधि के दौरान, उन्होंने कई स्वरचित रेडियो नाटक, फीचर कहानियों और उपयोगी वार्ताओं आदि का प्रसारण किया। बाद में, वह गुवाहाटी के आर्य विद्यापीठ महाविद्यालय में अर्थशास्त्र के व्याख्याता बने और 32 वर्ष की सेवा के बाद 1994 में उस संस्थान के अर्थशास्त्र के विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हुए।

3. श्री क्षत्री की बचपन से ही रचनात्मक साहित्य में गहरी दिलचस्पी थी और एक काव्य स्तुति के रूप में उनका पहला प्रकाशन ''शिव स्तुति'', 1948 में उनकी मातृभाषा नेपाली में एक बुकलेट के रूप में प्रकाशित हुआ। बाद में, उन्होंने कथा साहित्य लिखना शुरू किया। अब तक उनके चार उपन्यास, चार कहानी संग्रह, छह निबंध, छह नाटक और एक एकांकी नाटक, एक भूमिका संग्रह, एक काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुका है। 1957 में काठमांडू से प्रकाशित उनका पहला उपन्यास ''बसैन'' (अन्यत्र बसने के लिए मूल स्थान छोड़ने वालों की गाथा) एक बहुत बिक्री हुई और इसके अब तक 40 संस्करण छप चुके हैं। यह पिछले 50 वर्षों से त्रिभुवन विश्वविद्यालय के इंटरमीडिएट की पाठ्य पुस्तकों में शामिल है। चीनी, असमिया, मैथिली जैसी अन्य भाषाओं के अतिरिक्त, इस उपन्यास का पश्चिमी देशों के दो अलग–अलग विद्वानों सिएटल के लैरी हर्टशेल और लंदन विश्वविद्यालय (स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज) के प्रोफेसर डॉ. माइकल जे. हट्ट द्वारा दो बार अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। इस अनूदित रचना को कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क द्वारा प्रकाशित किया गया है और इस उपन्यास से लेखक को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। इस उपन्यास की कहानी पर आधारित इसी शीर्षक से एक फीचर फिल्म 2005 में नेपाल से विदेशी भाषा की फिल्म (नेपाली) के रूप में ऑस्कर के लिए नामांकित की गई थी। 1968 में प्रकाशित उनका एक अन्य उपन्यास ''अतृप्त'' भी काफी प्रसिद्ध रहा है और इसे गुवाहाटी विश्वविद्यालय द्वारा लगभग 20 वर्षों तक नेपाली एमआईएल की पाठ्य पुस्तक के रूप में शामिल किया गया। उनके तीसरे उपन्यास ''ब्रह्मपुत्र को छिउ–छाऊ'' (ब्रह्मपुत्र नदी के तट) के लिए उन्हें 1987 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ और साहित्य अकादमी ने कई भाषाओं में इस उपन्यास का अनुवाद और प्रकाशन किया है। उनकी लघु कहानियों और निबंधों को भी व्यापक स्तर पर सराहना मिली है और इनका कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है। दूरदर्शन द्वारा उनकी कुछ कहानियों पर आधारित टेलीफिल्म्स का प्रसारण भी किया गया था।

4. श्री क्षत्री कई सामाजिक, शैक्षिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक संगठनों से सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं। वह कई सामाजिक, साहित्यिक और शैक्षिक संस्थाओं के अध्यक्ष रहे हैं और कुछ वर्षों तक नेपाली सलाहकार बोर्ड, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली और नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया के सदस्य रहे हैं। वह गोरखा विकास परिषद, असम सरकार के भी सदस्य रहे हैं।

5. श्री क्षत्री को 1985 में पश्चिम बंगाल सरकार, दार्जिलिंग के भानु पुरस्कार; 1987 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, नई दिल्ली; मदन स्मारक सम्मान, बनारस, 2001; अगम स्मृति पुरस्कार, गंगटोक, सिक्किम, 2005; अभिजमन ट्रस्ट अवार्ड, कुवैत, 2008; नाइ देरुनिख इंटरनेशनल अवार्ड, काठमांडू, 2012; डॉ. भूपेन हजारिका की 88वीं जयंती के अवसर पर भूपेन हजारिका सांस्कृतिक ट्रस्ट की ओर से सम्मान; जगदंबा श्री अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार, काठमांडू 2016; इंटरनेशनल नेपाली लिटरेरी सोसाइटी, यूएसए से बासुदेव मालती स्मृति इंटरनेशनल अवार्ड, 2019; सिक्किम मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, गुवाहाटी से सम्मान, 2019 आदि सहित राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक फेलिसिटेशन, सम्मान, प्रशस्ति पत्र और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।